शोध मंथन Vol. XVII No.2 Apr.- June. 2026 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X, Impact Factor 8.889 (SJIF)
https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2026.v17i02.044

भारत–म्यांमार संबंधः ऐतिहासिक और वर्तमान परिप्रेक्ष्य

प्राप्तिः 06.04.2026
स्वीकृतः 07.06.2026

44

मीनाक्षी जोहल
शोधार्थी (राजनीति विज्ञान विभाग)
हिमाचल प्रदेश यूनिवर्सिटी
शिमला, हिमाचल प्रदेश
ईमेलः *meenakshijoel@gmail.com*

डॉ भावना शर्मा
सह–प्राध्यापक (राजनीति विज्ञान विभाग)
हिमाचल प्रदेश यूनिवर्सिटी
शिमला, हिमाचल प्रदेश

सारांश

भारत और म्यांमार संबन्ध दक्षिण एशिया और दक्षिण–पूर्व एशिया के बीच एक सेतु का कार्य करते है। दोनो देशों के संबंन्ध सांझा ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और धार्मिक रूप से एक दूसरे से जुड़े है जिनमें दोनों देशों की भौगोलिक निकटता, ऐतिहासिक संपर्क और सामरिक हित ने रिश्तों को विशेष महत्व प्रदान किया है। भारत और म्यांमार के संबन्धों की जड़ें बौद्व धर्म के माध्यम से और सांस्कृतिक आदान–प्रदान से गहरी हुई है। औपनिवषिक युग के दौरान दोनों देश ब्रिटिश भारत का हिस्सा थे और 1937 में बर्मा (म्यांमार) को भारत से अलग कर दिया गया। औपनिवेषिक शोषण और अनुभव ने दोनों देशो के आर्थिक, राजनितिक,सामरिक और सांस्कृतिक संबन्धों को आधुनिक समय में मजबूत किया है। भारत–म्यांमार संबन्धों में एक महत्वपूर्ण पहलू उनकी साझां सीमा है जो लगभग 1,643 किलोमीटर लम्बी है। यह सीमा भारत के उत्तर–पूर्वी राज्यों– अरूणाचल प्रदेश, नागालैंड, मणिपुर और मिजोरम से जुड़ी हुई है। इस कारण सीमा प्रबन्धन, सुरक्षा और अवैध गतिविधियां जैसे तस्करी तथा उग्रवाद से निपटना दोनों देशों के लिए एक सांझा चिंता का विषय है। भारत के लिए यह विषेश रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि उत्तर–पूर्वी क्षेत्र में सक्रिय उग्रवादी समूहों की गतिविधियां कभी–कभी म्यांमार की सीमा से जुड़ी रही है। इसलिए दोनों देशों के बीच सुरक्षा सहयोग लगातार बढ़ रहा है। फरवरी–2021 में म्यांमार में हुए सैन्य तख्तापलट ने भारत– म्यांमार संबन्धों पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाला है। इस तख्तापलट में म्यांमार की सेना जिसे तातमदाव कहा जाता है, ने आंग सान सू की नेशनल लीग फॉर डेमोक्रेसी की लोकतांत्रिक रूप से निर्वाचित सरकार को हटा दिया। इस तख्तापलट ने भारत और म्यांमार संबन्धों को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। और इसके साथ रोहिंग्या शरणार्थीयों की समस्या भी दोनों देशों के संबन्धों में एक महत्वपूर्ण कारक है। भारत की 'एक्ट ईस्ट पॉलिसी' का उद्देश्य क्षेत्रिय संपर्क को मजबूत करना है। भारत म्यांमार सबन्ध बहुआयामी और रणनीतिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। ये संबन्ध केवल दो देशों तक ही सीमित नहीं है बल्कि क्षेत्रिय सहयोग और स्थिरता से भी जुड़े हुए है। भविष्य में यदि दोनों देश आपसी विश्वास, सहयोग और संतुलित कूटनीति को बनाए

रखते है। तो यह संबन्ध केवल द्विपक्षीय स्तर पर नहीं बल्कि पूरें एशियाई क्षेत्र में शांति, विकास और समर्ध्दि को बढ़ावा दे सकते है।

मुख्य शब्द

भारत–म्यांमार, क्षेत्रिय सहयोग, सीमा–पार आतकंवाद, ऐतिहासिक संबन्ध, उपनिवेशवाद, तख्तापलट, रोहिंग्या, शरणार्थी, एक्ट ईस्ट पॉलिसी।

भारत–म्यांमार संबंधः ऐतिहासिक व राजनीतिक संबंध

विदेशी संबंध दूसरे देशों के साथ द्विपक्षीय, त्रिपक्षीय और बहुपक्षीय संबंधों को संचालित करने वाले मौलिक सिद्धांतो का समुह होता है। जिसका उद्देश्य अपने राष्ट्रीय हितों की सुरक्षा और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपने राष्ट्रीय हितों को बढ़ावा देना होता है। विदेशी संबंधों को सुचारू रूप से चलाने के लिए साधनों का प्रयोग समय और परिस्थिति पर निर्भर करते है। विदेशी संबंध पूर्णतः आंतरिक परिस्थितियों और विकास पर निर्भर करता है।(1)

बर्मा ने अपनी उत्पति के समय से ही एशियाई संस्कृति में महत्वपूर्ण स्थान हासिल करने के लिए प्रयास किए है। आंतरित और बाह्य दोनों प्रकार के विकास क्रम ने मुख्य दक्षिण–पूर्वी एशिया के सबसे बड़े देश की सुरक्षा, स्थिरता और स्वतंत्रता के बारे में चिंता को बढ़ाया है। इस देश का क्षेत्रफल लगभग 6,76,578 वर्ग किलोमीटर है और जनसंख्या 54 मिलियन से अधिक है, बर्मा के लिए एक अवांछनीय स्थिति दो एशियाई दिग्गजों भारत और चीन से घिरे होने की स्थिति है। बंगाल की खाड़ी और अंडमान सागर के साथ दक्षिण में इसकी महत्वपूर्ण तटरेखा है। जो उस क्षेत्र में हिंद महांसागर तक प्रवेश प्रदान करती है।(2)

भारत और बर्मा के बीच सहयोग ब्रिटिश विजय से पहले शुरू हुआ था। 14 वीं सदी में अराकानी राजाओं के भारत के साथ निकट संबंध थे। ब्रिटिश कब्जे के बाद दोनों राष्ट्र ब्रिटिश साम्राज्य के अधीन हो गए। 1937 ई. तक बर्मा ब्रिटिश साम्राज्य का हिस्सा था और 04 जनवरी 1948 को बर्मा अंग्रेजो से स्वतंत्र हुआ। ब्रिटिश शासन के विरूद्ध दोनों देशों ने स्वतंत्रता के लिए संघर्ष किया और स्वतंत्रता प्राप्त की।(3) भारत और बर्मा की स्वतंत्रता के बाद, राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ने 5 जनवरी 1948 को रंगून के नागरिकों की एक बैठक में कहा, "स्वतंत्र बर्मा आमतौर पर किसी भी समय भारत की सहायता और प्रोत्साहन का भरोसा कर सकता है।" दोनों देशों के प्रधानमंत्रियों नेहरू और यू नू के बीच सहयोग से दोनों देशों के बीच संबंध मजबूत हए। भारत और बर्मा ने 07 जुलाई 1951 को नई दिल्ली में 'मित्रता संधि' पर हस्ताक्षर किए। यह संधि लंबे समय तक थी। फरवरी 1965 में जनरल ने विन ने भारत का दौरा किया और फलस्वरूप 10 मार्च 1967 को सीमा समझौते पर सहमति हुई। 24 मार्च 1980 को नई दिल्ली में 1643 किलो मीटर की सीमा रेखा के मानचित्र पर हस्ताक्षर किए। विद्रोह के बाद सैन्य जुंटा सरकार ने 1989 में बर्मा का नाम बदलकर 'म्यांमार' कर दिया। (4) 1990 के दशक के मध्य में वाजपेयी भारत के 11वें प्रधानमंत्री बने। उनकी सरकार के नेता घनिष्ठ सामाजिक–सांस्कृतिक संबंधों को बढ़ावा देने के पक्ष में थे।(5) उनके कार्याकाल में द्विपक्षीय रिश्ते आपसी समझ, सम्मान और सदभावना पर आधारित थे। म्यांमार के भारत संबंधों की विषेशता राजनीतिक और आधिकारिक स्तरों पर बातचीत रही है।(6)

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2026.v17i02.044

भारतीय वाणिज्य सचिव पी.पी. ने दोनों देशों के बीच व्यपार बढ़ाने के लिए नवंबर 1998 में म्यांमार का दौरा किया। वाणिज्य सचिव की यात्रा के दौरान रंगून तक संयुक्त अधिकारियों ने बिना किसी प्रतिबंध के सीमा व्यापार जारी रखने पर सहमति व्यक्त की।(7)

जुलाई 1999 में नई दिल्ली में म्यांमार और भारत के गृह मंत्रालय के अधिकारियों के बीच एक उच्च स्तरीय बैठक हुई। बैठक में सीमा पार आतंकवाद, खुफिया जानकारी सांझा करने और बेहतर संचार संपर्क जैसी समस्यओं पर साझेदारी करने और बेहतर समन्वय को स्थापित करने के तरीकों और साधनों पर चर्चा की गई। इसके साथ ही मादक पदार्थों की तस्करी रोकने के लिए एक सख्त कदम उठाने और कार्यवाही करने का भी निर्णय लिया गया।(8)

म्यांमार की समारूढ़ राज्य शांति और विकास परिषद के उपाध्यक्ष जनरल माउंग ऐ ने आतंकवाद के खतरे से निपटने में भारत को पूर्ण सहयोग की गारंटी दी। जनरल की मेजबानी करके सरकार की आलोचना भी हुई थी कि नई दिल्ली म्यांमार के नेता आंग सान सू की के लोकतंत्र समर्थक संघर्ष को नजरअंदाज कर रही है।(9)

इसके बाद 1997 में म्यांमार 'एसोसिएशन ऑफ साउथ ईस्ट एशियन नेशंस' (आसियान) में और (बिमस्टेक) में शामिल हुआ। वाजपेयी सरकार के आगमन से बर्मी सेना के प्रति भारतीय दृष्टिकोण में बदलाव आया। उन्होंने यथार्थवादी दृष्टिकोण अपना कर भारत की बर्मी नीति को नया आकार दिया। उनकी पूर्वी रणनीति ने भारत को देश की भू–राजनीतिक स्थिति का लाभ उठाकार म्यांमार के माध्यम से एशिया में पैर जमाने का लक्ष्य दिया।(10)

परिणामस्वरूप, नई दिल्ली ने बर्मा में लोकतंत्र की बहाली के लिए अपनी प्रतिबद्धता को कम करना शुरू किया और बर्मी जुंटा के साथ खुले तौर पर जुड़ने का फैसला किया, ताकि उसके साथ घनिष्ठ साझेदारी स्थापित की जा सके। भारत की ओर से कई उच्च स्तरीय दौरे, वार्ताएं और परियोजनाएं शुरू की गई। फरवरी 2001 में भारत के विदेश मंत्री जसवंत सिंह ने म्यांमार की महत्वपूर्ण यात्रा की, उन्होंने 160 किलोमीटर लंबी तामू–कालेवा–कालेम्यो सड़क, जिसे इंडो–म्यांमार फेंडशिप रोड का नाम दिया गया का उद्घाटन किया जो कि पूरी तरह से भारत द्वारा वित्त पोषित है। भारत के प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी (1998–2004) ने भारत–म्यांमार संबंधों में एक नए दृष्टिकोण को अपनाया।(11) म्यांमार ने अक्टूबर 2004 में नई दिल्ली में राज्य शांति और विकास परिषद (एस.पी.डी.सी) के अध्यक्ष, वरिष्ठ जनरल थान श्रेव की आधिकारिक यात्रा की। वाणिज्य और रणनीतिक मुद्दों के क्षेत्र में आठ समझौतों पर हस्ताक्षर किए गए। यात्रा के अंत में जारी संयुक्त ब्यान में म्यांमार सरकार ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में स्थायी सदस्यता के लिए भारत की दावेदारी के लिए पूर्ण समर्थन व्यक्त किया। यह यात्रा बहुत सफल रही और इससे म्यांमार के नेतृत्व में भारत के प्रति काफी सद्भावना पैदा हुई।(12)

बर्मा में भारतीय प्रवासी भारत–म्यांमार संबंधों में एक महत्वपूर्ण कारक थे। म्यांमार में भारतीय समुदाय की उत्पति का पता ब्रिटिश शासन की स्थापना के साथ 19 वीं सदी के उतरार्ध में लगाया जा सकता है जब बुनियादी ढांचे के विकास और निर्माण कार्यों के लिए भारतीय श्रम का बड़े पैमाने पर उपयोग किया गया था। भारतीय किसानो को अछूती भूमि पर खेती करने के लिए वहां ले जाया गया था। इसके

साथ ही ऐसे महत्वपूर्ण क्षेत्र थे जिनमें सिविल सेवाएं, शिक्षा, व्यवसायिक सेवाएं, व्यापार और वाणिज्य शामिल थे, जो बड़े पैमाने पर भारतीय समुदाय के हाथों में थें। इस समय म्यांमार में भारतीयों की कुल संख्या 2. 9 मिलियन होने का अनुमान है, जो म्यांमार की कुल आबादी का लगभग 5 प्रतिशत है।

उच्च स्तरीय दौरे

म्यांमार के राज्य उपाध्यक्ष जनरल माउंग ऐ की यात्रा के साथ 2000 में शांति एवं विकास परिषद द्वारा म्यांमार के भविष्य के सामरिक महत्व को मान्यता दी गई। इस यात्रा के दौरान दोनों देशों ने आम सुरक्ष चिंताओं के मुद्दों पर चर्चा की और भारत के पुर्वोतर में उग्रवाद विरोधी अभियान चलाने में गहरी साझेदारी की पहचान की और सहयोग में तेजी लाने का फैसला किया। भारत का पूर्वोतर निश्चित रूप से भारतीय सुरक्षा तंत्र का सबसे संवेदनशील क्षेत्र है। असम, त्रिपुरा और नागालैंड जैसे क्षेत्रों के लोग खुद को अलग बताते है, जबकि छोटे–बड़े विद्रोही समूहों के लिए यह सक्रिय क्षेत्र बना हुआ है, ब्लकि भारतीय सीमा पर पूर्वोतर विद्रोहियों द्वारा स्थापित शिविर, जो भारतीय सुरक्षा के लिए एक बड़ी चुनौती हैं, विषेश महत्व रखता है। राजनीतिक संबंधों को मजबूत करने के लिए 2004 में थान श्रेव ने भारत की यात्रा की, जिसके दौरान म्यांमार ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में स्थाई सीट के लिए भारत का समर्थन किया। 2005 की शुरूआत में जनरल माउंग ऐ की भारत यात्रा के दौरान महत्वपूर्ण समझौतों पर हस्ताक्षर किए गए, विषेश रूप से कलादान मल्टी मोडल ट्रांजिट प्रोजेक्ट।(13)

भारत–म्यांमार संबंधों में कई वर्षों से उच्च स्तरीय दौरे नियमित रूप से होते है। 30 मार्च 2011 को राष्ट्रपति थेन सीन के नेतष्त्व में नई सरकार के गठन के बाद, विदेश मंत्री श्री एस.एम.कृष्णा 20–22 जून 2011 को म्यांमार का दौरा करने वाले पहले उच्च स्तरीय गणमान्य व्यक्ति थे। (14) प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 2014 में 12 वें असियान–भारत शिखर सम्मेलन और नेपीतो में 9 वीं पूर्व–एशिया शिखर सम्मेलन में भाग लिया। प्रधानमन्त्री ने 2017 (5–7 सितंबर, 2017) में म्यांमार का दौरा किया, जब हमारे द्विपक्षीय सहयोग को मजबूत करने के लिए विभिन्न क्षेत्रों में 12 समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए थे। म्यांमार की पूर्व स्टेट काउंसलर दाव आंग सान सुकी ने 17–19 को भारत की राजकीय यात्रा की और अक्टूबर 2016 में गोवा में ब्रिक्स–बिम्सटेक आउटरीच शिखर सम्मेलन में भाग लेने के बाद उन्होंने जनवरी 2018 में 25वें भारत–आसियान सम्मिट के लिए भारत का दौरा किया और प्रधानमन्त्री के साथ द्विपक्षीय वार्ता भी की। भारत की पूर्व विदेश मन्त्री श्रीमती सुषमा स्वराज ने 10–11 मई 2018 और 22 अगस्त 2016 को म्यांमार का दौरा किया। म्यांमार के पूर्व राष्ट्रपति यु विन मिंट और प्रथम महिला डॉव चो चो ने 27–29 फरवरी 2020 तक भारत की राजकीय यात्रा की जिसके दौरान त्वरित प्रभाव परियाजनाओं (क्यूआईपी) के कार्यन्वयन जैसे क्षेत्रों मे 10 समझौता ज्ञापन/समझौतें, रखाईन राज्य के अन्तर्गत परियोजनाएं विकास कार्यक्रम, मानव तस्करी की रोकथाम, और पेट्रोलियम, संचार और स्वास्थ्य अनुसंधान जैसे क्षेत्रों में सहयोग पर हस्ताक्षर किए गए। सितंबर 2020, में भारत और म्यांमार के कानून मन्त्री, अक्टूबर 2022 में भारत के वाणिज्य मन्त्री और भारत के विदेश सचिव ने नवंबर 2022 में म्यांमार का दौरा किया।(15)

म्यांमार मे भारत जिन परियोजनाओं में शामिल रहा है। उनमें कलादान, मल्टीमॉडल ट्रांजिट ट्रांसपोर्ट प्राजेक्ट त्रिपक्षीय राजमार्ग परियोजना, जो हमारे पूर्वोतर को म्यांमार और थाईलैंड से जोड़ने वाला एक पूर्व पश्चिम गलियारा है।(16)

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2026.v17i02.044

सांस्कृतिक संबंध

भारत और म्यांमार के बीच बौद्व धर्म घनिष्ठ सांस्कृतिक संबंध और गहरी रिश्तेदारी की विरासत है। भारत और म्यांमार के बीच सांस्कृतिक संबंधों में दोनों देशों के सांस्कृतिक मंडलों को नियमित यात्राएं शामिल है। यांगून में भारतीय दूतावास में स्वामी विवेकानंद सांस्कृतिक केंद्र नामक एक पूर्ण सांस्कृतिक केंद्र है जो योग सांस्कृतिक प्रातियोगिताओं, नृत्य कक्षाओं, सेमिनारों और वार्ता जैसे नियमित कार्यक्रमों का आयोजन करता है। (17)

वर्तमान परिप्रेक्ष्यः रोंहिग्या संकट

रोंहिग्या संकट भारत–म्यांमार संबंधों के लिए एक महत्वपूर्ण मानवीय और सुरक्षा चुनौती बन गया है। 2017 में हिंसक सैन्य कार्रवाई के बाद म्यांमार के रखाइन राज्य से रोहिंग्या मुस्लिम अल्पसंख्यकों के बड़े पैमाने पर विस्थापन के कारण पड़ोसी देशों, मुख्य रूप से बांग्लादेश में 7,00,000 से अधिक शरणार्थियों का पलायन हुआ। इस स्थिति ने भारत सहित अपने पड़ोसियों के साथ म्यांमार के संबंधों को तनावपूर्ण बना दिया है, क्योंकि यह संकट क्षेत्रिय राजनीति और सुरक्षा व्यवस्था पर पड़ रहा है। भारत ने बांग्लादेश में रोहिंग्या शरणार्थियों और आंतरिक रूप से विस्थापित व्यक्तियों को मानवीय सहायता प्रदान की और 'ऑपरेशन इंसानियत' जैसी पहल के माध्यम से म्यांमार के संकट से निपटने के लिए सहायता प्रदान की है। रोहिंग्या संकट ने म्यांमार के साथ भारत के संबंधों को जटिल बना दिया है। भारत की सतर्क कूटनीतिक भागीदारी और मानवीय सहायता यह दर्शाती है कि भारत इस संकट को अपने व्यापक क्षेत्रीय हित्तों को खतरे में डाले बिना प्रबंधित करने का प्रयास कर रहा है। म्यांमार के साथ भारत के संबंध न केवल द्विपक्षीय संबंधों के लिए बल्कि पूरे दक्षिण पूर्व एशियाई क्षेत्र की स्थिरता के लिए भी महत्वपूर्ण है।(18)

फरवरी 2021 में म्यांमार में तातमदाव (म्यांमार की सेना) के नेतृत्व में सैन्य तख्तापलट ने आंग सान सू की की लोकतांत्रिक रूप से चुनी गई सरकार नेश्नल लीग फॉर डेमोक्रेसी को बाहर कर दिया। सेना ने 2020 के चुनावों में व्यापक चुनावी धोखाधड़ी का आरोप लगाकर अपने अधिग्रहण को उचित ठहराया हालांकि इन दावों को अंर्तराष्ट्रीय पर्यवेक्षकों द्वारा खारिज किया गया था। तख्तापलट ने म्यांमार को राजनीतिक अराजकता में डाल दिया है, जिससे राष्ट्रव्यापी विरोध प्रदर्शन, सविनय अवज्ञा और सशस्त्र प्रतिरोध बढ़ गया है। इस स्थिति के कारण बड़े पैमाने पर गिरफ्तारी, हत्याएं और विस्थापन सहित गंभीर मानवाधिकारों का उल्लघंन हुआ है, क्योंकि सेना विपक्षी आंदोलनों को दबाने का प्रयास कर रही है। राजनीतिक परिदृश्य अस्थिर बना हुआ है। सेना और विभिन्न जातिय सशस्त्र समूहों और नवगठित प्रतिरोध बलों के बीच लगातार झड़पें हो रही है। तख्तापलट के प्रति भारत की कूटनीतिक प्रतिक्रिया सतर्क और संतुलित रही। जबकि नई दिल्ली ने सेना की कार्यवाइयों पर गहरी चिंता व्यक्त की और लोकतंत्र की बहाली का अहवाहन किया। भारत ने जुंटा की सीधे निंदा से परहेज किया है। यह सतर्क रूख म्यांमार में भारत के जटिल रणनीतिक हितों को दर्शाता है, जिसमें इसकी पूर्वोत्तर सीमा पर स्थिरता बनाए रखना, सीमा पार बुनियादी ढांचा परियोजनाओ की सुरक्षा सुनिश्चित करना और क्षेत्र में चीन के बढ़ते प्रभाव को संतुलित करना शामिल है। (19) एक्ट ईस्ट पॉलिसीः भारत सरकार द्वारा दक्षिण– पूर्व एशिया के देशों के साथ व्यापक आर्थिक और रणनीतिक संबंध विकसित करने का एक प्रयास है। ताकि क्षेत्रिय शक्ति के रूप में अपनी

स्थिति को मजबूत किया जा सके और पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना के रणनीतिक प्रभाव के लिए एक प्रतिसंतुलन बनाया जा सके। 1991 में प्रधानमंत्री नरसिम्हां राव की सरकार ने 'लुक ईस्ट नीति' के रूप में इसकी शुरूआत की गई थी। 2014 में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के प्रशासन ने 'लुक ईस्ट नीति' के उतराधिकारी के रूप में 'एक्ट ईस्ट पॉलिसी' की घोषणा की। ये नीति पड़ोसी देशों को प्राथमिकता देने की नीति और दक्षिण–एशियाई देशों पर केन्द्रीत है।(20) निष्कर्षः म्यांमार मे 2021 के तख्तापलट के बाद, भारत को अपनी विदेश नीति के दर्षष्टिकोण को फिर से व्यवस्थित करने की चुनौती का सामना करना पड़ रहा है। इसे क्षेत्रीय स्थिरता और लोकतांत्रिक मूल्यों को बढ़ावा देते हुए अपने रणनीतिक हितों को बनाए रखने की कोशिश करनी चाहिए। म्यांमार के राजनीतिक परिदष्श्य की जटिलताओं को प्रभावी ढंग से समझने के लिए, भारत को एक लचीली और बहुआयामी राजनीतिक रणनीति अपनानी चाहिए। जिसमें सैन्य जुंटा, राजनीतिक विपक्ष और जातीय अल्पसंख्यक समूहों सहित कई हितधारकों के साथ जुड़ना शामिल है। राजनीतिक संकट के शांतिपूर्ण समाधान के उद्देश्य से बातचीत द्वारा भारत अपने प्रभाव का उपयोग उन चर्चाओं को सुविधाजनक बनाने के लिए कर सकता है जो लोकतांत्रिक शासन और मानवाधिकारों के महत्व पर जोर देते हुए अधिक समावेशी राजनीतिक प्रक्रिया की ओर ले जाती है। इसके अतिरिक्त, भारत को संघर्ष से प्रभावित लोगों विषेश रूप से रोहिंग्या शरणार्थियों की तत्काल जरूरतों को पूरा करने के लिए मानवीय सहायता बढ़ाने का विचार करना चाहिए। (21) भारत को भारत–म्यांमार–थाईलैंड त्रिपक्षीय राजमार्ग और बुनियादी ढांचा परियोजनाओं में निवेश को प्राथमिकता देनी चाहिए। क्योंकि ये कनेक्टिविटि को बढ़ा सकते है और सीमावर्ती क्षेत्रों में स्थिरता ला सकते है। उर्जा, कषि और डिजिटल प्रौद्यियोगिकी जैसे क्षेत्रों में सहयोग आर्थिक संबंधों को और मजबुत कर सकता है। और पारस्परिक लाभ बढ़ा सकता है। म्यांमार में स्थिरता को बढ़ावा देते हुए अपने राष्ट्रीय हितों को सुरक्षित रखने के लिए भारत को अपने क्षेत्रीय संबंधों में सक्रिय होना चाहिए। म्यांमार के लोकतांत्रिक परिवर्तन का समर्थन करने और रोहिंग्या मुद्दे से उत्पन्न मानवीय संकट को दूर करने के लिए एक सामंजस्यपूर्ण रणनीति विकसित करने में आसियान और अन्य अंतरराष्ट्रीय भागीदारों के साथ सहयोग करना महत्वपूर्ण होगा। बातचीत और सहयोग को प्राथमिकता देकर, भारत इस क्षेत्र में शांति और स्थिरता सुनिश्चित करने में खुद को एक प्रमुख खिलाड़ी के रूप में साबित कर सकता है।(22)

संक्षेप में, भारत दक्षिण पूर्व एशिया में आर्थिक सहयोग, संघर्ष प्रबंधन और शांति–सुरक्षा पर ध्यान केंद्रित करके क्षेत्रिय स्थिरता और म्यांमार में अपने प्रभाव को बढ़ा सकता है। इसके साथ ही असियान और अन्य अन्तर्राष्ट्रीय भागीदारों के साथ सहयोग करके ठोस रणनीति विकसित की जा सकती है और शांति व स्थिरता सुनिश्चित करने में भारत अहम भूमिका निभा सकता है।

संदर्भ

1. Upreti, B.C., Uneasy Friends: Reading on Indo-Nepal Relations, Kalinga Publications, Delhi, Pg. **108**
2. Sharma, S.M., Indian Foreign Policy, Annual Survey, 1978, Foreign Research Centre, New Delhi, 2001–2002, Pg. **23**

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2026.v17i02.044

3. The Nations, Rangoon, October, 1995
4. Annual Report 2001–2002, Ministry of External Affairs, New Delhi, www.mea.gov.in
5. https://en.wikipedia.org/wiki/Premiership_of_Atal_Bihari_Vajpayee
6. Thapliyal, S., "Perception of the Other: Myths or Realities," in Monika Mandal (ed.), Indo-Nepal Relations, K.W. Publishers Pvt. Ltd., New Delhi, 2011, Pg. **91**
7. Khilnani, R.K., Restructuring India's Foreign Policy, Commonwealth Publishers, New Delhi, 2000, Pg. **54**
8. Asian Age Newspaper, New Delhi, 17 November 2002
9. Ratha, Keshab Chandra and Sushanta Kumar Mahapatra, "India and Myanmar: Exploring New Vista of Relationship," World Focus, Vol. 34, No. 10, 2013, Pg. **30–37**
10. Egretau Renaud, Paper presented in Conference on the topic of "India and Burma/ Myanmar Relations: From Idealism to Realism," India International Centre, New Delhi, 11 September 2003
11. Egretau Renaud, Paper presented in Conference on the topic of "India and Burma/ Myanmar Relations: From Idealism to Realism," India International Centre, New Delhi, 11 September 2003
12. Lall, Maria, "Indo-Burma Relations in the Era of Pipeline Diplomacy," Institute of Southeast Asian Studies, Vol. 28, No. 3, December 2006, Pg. **424–446**
13. Lall, Maria, "Indo-Burma Relations in the Era of Pipeline Diplomacy," Institute of Southeast Asian Studies, Vol. 28, No. 3, December 2006, Pg. **424–446**
14. India- Myanmar Relations, Ministry of External Affairs https://www.mea.gov.in
15. India–Myanmar Bilateral Brief, Ministry of External Affairs, https://www.mea.gov.in
16. India–Myanmar Bilateral Brief, Ministry of External Affairs, https://www.mea.gov.in
17. India–Myanmar Bilateral Brief, Ministry of External Affairs, https://www.mea.gov.in
18. "India–Myanmar Relations: Navigating Strategic Challenges Amid Political Turmoil and Border Security Issues," September 2024, www.theacademic.in, Pg. **346**
19. "India–Myanmar Relations: Navigating Strategic Challenges Amid Political Turmoil and Border Security Issues," September 2024, www.theacademic.in, Pg. **348-349**
20. https://en.wikipedia.org
21. "India–Myanmar Relations & Navigating Strategic Challenges Amid Political Turmoil and Border Security Issues," September 2024, www.theacademic.in, Pg. **351–352.**
22. "India–Myanmar Relations & Navigating Strategic Challenges Amid Political Turmoil and Border Security Issues," September 2024, www.theacademic.in, Pg. **352**.